सुनामी ने अंडमान को कितना खिसकाया?

भारतीय समुद्र में आए सुनामी के चार साल बाद, भौगोलिक गणनाओं से जो नए आंकड़े निकलकर सामने आ रहे हैं उनके आधार पर कहा जा रहा है कि सुनामी ने अंडमान और निकोबार को लगभग 7 से.मी. ही खिसकाया है, न कि 1 मीटर जैसा कि पहले कहा जा रहा था।

भारतीय भू-वैज्ञानिकों के एक समूह द्वारा सर्वे ऑफ इण्डिया द्वारा एकत्रित शुरुआती आंकड़ों के पुनरावलोकन से जो नए तथ्य उभरकर आए हैं वे एक नया महत्वपूर्ण सवाल भी खड़ा करते हैं - क्या वर्ष 2004 में समुद्र में आए भूकम्प के विस्तार और विशालता के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता है? इसके लिए उस घटना की विशालता और विस्थापन से जुड़े सभी सरकारी आंकड़ों की समीक्षा की ज़रूरत होगी।

सुनामी के तत्काल बाद, सर्वे ऑफ इण्डिया ने अनुमान लगाया था कि अंडमान-निकोबार द्वीप समूह की राजधानी पोर्टब्लेयर अपनी जगह से लगभग सवा मीटर दक्षिण-पूर्व दिशा की ओर खिसक चुकी है।

लेकिन पोर्टब्लेयर कंट्रोल प्वाइंट में समुद्र स्तर 25 से.मी. ही नीचे गया था। दूसरी ओर औसत समुद्र जल स्तर भी सुनामी के बाद 1.5 मीटर बढ़ चुका था। इसका मतलब था कि कंट्रोल स्टेशन थोड़ा धंस भी गया था।

हैदराबाद के नेशनल जियोफिजिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट; बैंगलोर के सेंटर फॉर मैथेमैटिकल मॉडलिंग एण्ड कम्प्यूटर सिमुलेशन; गोआ के नेशनल सेंटर फॉर एन्टार्कटिक एण्ड ओशिएन रिसर्च और पोर्टब्लेयर स्थित भारतीय मौसम विभाग, ने संयुक्त अध्ययन के बाद निष्कर्ष निकाला कि कुल विस्थापन 7 से 12 से.मी. के बीच रहा है।

जियोफिज़िकल रिसर्च इंस्टीट्यूट के मुख्य शोधकर्त्ता विनीत कुमार गहलोत के मुताबिक यह अंतर दो अलग-अलग प्रक्रियाओं द्वारा लगाए गए अनुमानों का परिणाम हो सकता है। सर्वे ऑफ इण्डिया द्वारा निकाले गए नतीजों में भूकम्प से जुड़ी अन्य भौगोलिक विकृतियों को भी शामिल किया गया था। पोर्टब्लेयर में भूकम्प सम्बंधी विरूपताओं में उसका पश्चिम-दक्षिण-पश्चिम की ओर 3.5 मीटर घुमाव और लगभग एक मीटर का धंसाव शामिल है। जबकि ताज़ा आंकड़े भूकम्प के बाद आए परिवर्तनों की बात करते हैं।

भूकम्प के बाद आने वाले परिवर्तनों का निरीक्षण भूकम्प के 16 दिन बाद जाकर शुरू हुआ था। इसलिए हम नहीं जानते कि इस अवधि में कितनी भौगोलिक विकृतियां आई होंगी। भूकम्प के तुरंत बाद किए गए अध्ययनों में खिसकाव या विस्थापन 0.25 मी. से 1.5 मीटर के मध्य आंका गया था, जबकि ताज़ा अध्ययन इसे 7 से 12 से.मी. के बीच ही मानता है।

गहलोत कहते हैं कि इन अनुमानों का काफी असर भूकम्प की तीव्रता या उसके प्रभाव और उस क्षेत्र में भूकम्प की पुनरावृत्ति के समयान्तराल के आकलन पर होगा। टीम ने भूकम्प की जो संशोधित तीव्रता सुझाई है वह 9.23 है, जबकि प्रारंभिक अनुमानों से यह तीव्रता 9.0 से 9.3 आंकी गई थी।

भारत को सुनामी के कारण अपने दक्षिणतम बिंदु के रूप में सामरिक महत्व की भूमि खोनी पड़ी, जो इण्डोनेशिया से महज 120 कि.मी. की दूरी पर थी और जिसे अब लहरों ने निगल लिया है। यह पहला मौका है जब लहरों ने भारत के दक्षिण-पश्चिम की 20 कि.मी. ज़मीन निगली है। भारत का दक्षिणतम बिंदु इन्दिरा पॉइन्ट और लाल-सफेद लाइट हाउस नामक प्रमुख सीमा चिन्ह (जो पहले समुद्र के तट पर था) भी अब पानी में डूब चुके हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***